Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- IX | ISSUE- VII | JULY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

सामोद का कलात्मक विवेचन

डॉ. मीनाक्षी शर्मा
शोधार्थी,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

कला और शौर्य की क्रिड़ास्थली, राजस्थान के कण-कण में कला और इतिहास रचा बसा है। इसी शृंखला में सामोद कस्बा भी शताब्दियों का गौरवशाली कला का इतिहास और विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान रखता है। यहां के दुर्ग और गढ़ों, भव्य एवं कलात्मक चित्रित, अलंकृत राजप्रसादों, शिल्प व सौंदर्य से सम्पन्न देव मन्दिरों के रुप में कला और संस्कृति की अनमोल सम्पदा विद्यमान है। ये चित्रित और अलंकृत स्मारक स्थानीय इतिहास की विविध घटनाओं से संबंधित होने के कारण अतीत की बिखरी वादियों को जोड़ने की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मूल शब्द : *कलात्मक, स्थापत्य कला, मूर्तिकला, अलंकरण, भित्तिचित्र, बहुरंग।*

सामोद जयपुर से लगभग ४५ किमी उत्तर को एवं चौमू से ६ किमी दूर स्थित है। यह सबसे पुरानी जागीरों में से है। सबसे पहले आमेर के राजा पृथ्वीसिंह के १६ पुत्रों में से चतुर्थ पुत्र गोपाल (१५२६-१५६४ ई.) को यह जागीर में मिली थी। गोपाल का पुत्र नाथा (१५६४-१५८३) था। जिसके कारण उसके वंशज नाथवत कहलाये। यू भी नाथावत आमेर जयपुर के कच्छवाहा राजवंश की एक शाखा है। बाद में इन्हें 'रावल' की पदवी भी दी गई। कहा जाता है कि आमेर जयपुर राज्य के राजाओं का राजतिलक सामोद के सामन्त ही करते थे व जयपुर राज्य के प्रमुख सामन्तों में से थे और राज्य के महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे।

सामोद की चित्रकला

सुल्तान महल के भित्ति चित्र :- कृष्ण रासलीला :- यह सुल्तान महल के झरोखे के ऊपर स्थित है इसमें श्री कृष्ण व राधा के रास का चित्रण है श्री कृष्ण व राधा के सिर के पीछे आभा मण्डल बना है। प्रत्येक राधा का गोर वर्ण, आभूषणों से सुसज्जित है। राधा-कृष्ण के चार जोड़े है कृष्ण पीली धोती पहने है तथा मुकुट के ऊपर मोर पंख लगा है राधा घाघरा, चुनड़ी और चोली में है। इनमें स्वर्ण रंग का भी प्रयोग किया जाता है।

हाथियों की लड़ाई:- सुल्तान महल के अन्दर के कक्ष में स्थित है इसमें मुख्य पृष्ट भूमि में दो हाथी अपनी सूंडों से लड़ते दिखाया गया है जिन पर महावत बैठे है तथा सजे-धजे है इसमें मानव आकृतियों की भरमार है जो विभिन्न मुद्राओं में है। हाथियों के पीछे दूर तक महलों का नजारा है तथा ऊपर की ओर नीला आसमान बना है। कहीं-कहीं वृक्ष भी बनाये गये इस भित्तिचित्र को देखकर लगता है कि चित्रकार ने बहुत दूर के दृश्य का चित्रण किया है। एक घुड़सवार भी बना हुआ है घोड़े गतिशील अवस्था में है।

झरोखे में राधा-कृष्ण:- यह चित्र सुल्तान महल में स्थित है इस चित्र में मध्य में बगीचे में सिहासन पर राधा-कृष्ण बैठे हुए है राधा-कृष्ण के सिर के पीछे आभा मण्डल बना है कृष्ण मुँह डेढ़ चश्म व राधा का मुख एक चश्म है। कृष्ण गहरे नीले रंग के तथा राधा गौर वर्ण की है। राधा कृष्ण के सामने दो मानव आकृतियों जो एक नर एक नारी है जो अस्पष्ट है। राधा कृष्ण के पीछे एक दरबारी खड़ा है इसके सिर के पीछे भी आभा - मण्डप बने है व्यक्ति गौर वर्ण का है। बगीचे के आगे-पीछे संगमरमर की दीवार बनी है। इस दीवार के पीछे घने वृक्ष बने है। इनके ऊपर हल्का नीला आसमान बना है। तथा आगे की दीवार के आगे गहरे रंग के पौधे बने है। इस चित्र में कई स्थानों सें रग उतरा हुआ है।

सामोद शीशमहल के भित्ति चित्र - स्त्रीयुग्म:-शीश महल में कई स्थान पर पैनल बने है जिसमें चार महिलायें बनी है। जिसमें मध्य में गोल फूल-पत्तियों की आकृति

बनी है तथा इसके दायें-बायें दो महिलाओं का युग्म है जो एक महिला आगे व दूसरी महिला उसके पीछे है तथा जुड़ी हुई सी लगती है, इस चित्र में सम्पूर्ण पृष्ट गहरे नीले रंग का है। इन आकृतियों के अलावा जो स्थान शेष रहा वहाँ फूलों का अलंकरण से भरा हुआ है। दोनों महिला युग्मों वस्त्र समान एकसार पहने हुए है। इसमें स्वर्ण रंग का प्रयोग है नीले रंग का अधिक प्रयोग है।

महिला का चित्रः- यह चित्र शीश महल के एक दरवाजे के पास स्थित है इसके चारों ओर बैल बना हसिया है तथा चित्र की पृष्टभूमि हल्के हरे रंग की है मध्य में महिला लाल रंग का मुगलकालीन जामा जैसे वस्त्र पहने है दुपट्टा सिर पर नहीं है। हाथ में फूल लिये हुए है। महिला आभूषण पहने है। चेहरा डेढ चश्म है। चित्र के अग्रभग में फूलों के छोटे-छोटे पौधे लगे है।

शिकार दृश्यः- यह चित्र शीशमहल में स्थित है। इस चित्र में शिकार का दृश्य है इसमें हरा घास का मैदान है, जिस पर हिरण दौड़ रहे है उनके पीछे घुड़सवार दौड़ रहे है। पृष्टभाग पर ऊँची नीची पहाड़ियाँ बनी है। उन पहाड़ियों पर जंगली पशु व वृक्ष नजर आ रहे है। अग्रभाग जल की नदी नजर आ रही है। कहीं-कहीं वृक्षों के झुण्ड नजर आ रहे है।

युद्ध दृश्य :- यह भित्ति चित्र शीश महल में स्थित है इस चित्र में अग्रभाग में ही हाथी, घोड़े, सैनिक बने है। मध्य भाग में मैदान व लहरदार पहाड़ बने हुए है जो कई परतों में है। पहाड़ के पीछे हरे वृक्षों की कतार बनी हुई है। पेड़ के ऊपर आसमान जरासा नजर आ रहा है।

राधा-कृष्णः- यह चित्र शीशमहल से सटे एक कक्ष में स्थित है जिसकी पृष्ठभूमि नीली है, और समस्त कक्ष पर सफेद रंग में सुन्दर व भव्य अलंकरण किया गया है इस चित्र में पृष्ठभूमि हल्के नीले रंग की है। पृष्ठ भूमि में दूर-दूर पर पौधों की कतारें है मध्य में राधा-कृष्ण बने है राधा गोरे रंग की तथा कृष्ण श्याम वर्ण के है। सिर पर आभामण्डल बने है। कृष्ण मोर पंख युक्त मुकुट, गुलाबी दुपट्टा व पीली धोती पहने है। राधा लाल रंग का लहंगा, पीली चोली पहने है व झीनी चुनड़ी ओढे है। दोनों के पैरों के नीचे एक गोल चक्र बना है। कृष्ण हाथ में बांसुरी लिये हुए है लेकिन एक हाथ ही नजर आ रहा है राधा एक हाथ से चुनड़ी पकड़े तथा दूसरा हाथ कुछ बतलाने की मुद्रा में है। चित्र के चारों ओर अण्डाकार साधा पीले रंग का हसिया बना हुआ है।

इसी कक्ष में राधा कृष्ण का चित्र है जिसमें राधा कृष्ण कुछ गतिशील लग रहे है, दोनों के सिर के पीछे आभामण्डल बने है दोनों के चेहरे एक चश्म है तथा एक दूसरे को देखते हुए है कृष्ण लाल रंग का दुपट्टा व पीले रंग की धोती व मोर मुकुट पहने है। राधा लाल रंग का लहंगा उसपर गुलाबी रंग दुपट्टा बांधे हुए तथा हल्के आसमानी चूनड़ी पहने है दोनों के पैरों के नीला गोल चक्र बना है। अण्डाकार पीले रंग का साधारण हशिया बना हुआ है।

राजा जनक :- यह चित्र शीशमहल से सटे गलियारे की दायीं दीवार पर स्थित है। इस चित्र में पृष्ठ भाग नील हल्के नीले रंग का बना है। अग्रभाग में राजा का व्यक्ति चित्र बना है। राजा वृद्ध व्यक्ति है उनके सफेद लम्बी दाढी बनी है सिर पर पगड़ी बंधी है। गहरे नीले रंग का कन्धों पर दुपट्टा रखा है। पीले रंग की धोती बांध रखी है। ये राजा बैठी हुई अवस्था में चित्रित है इसकी गोद में दो राजकुमार बैठे है जो एक श्यामवर्ण का राम जैसा गौरे वर्ण का लक्ष्मण जैसा लगता है।

सभाभवन :- सभाभवन दो मंजिल का बना हुआ है नीचे की मंजिल अत्यन्त सुन्दर भव्य रंगीन, फुलो, पत्तों, बूटो, बेलो, बैलो से बनी जालियों से भरी है इसमें एक इंच भी ऐसी जगह नहीं है जो खाली हो इनके ऊपर रानियों के सभा भवन की कार्यवाही देखने के लिए खिड़कियाँ बनी है। इन खिड़कियों के मध्य जो स्थान है उस पर अनेक सुन्दर चित्र बने है जिनमें राधा-कृष्ण, देवी-देवताओं के सभा भवन की कार्यवाही करते राजा महाराजाओं के चित्र बने है इन खिड़कियों के ऊपर सभा भवन की छत बनी है। जो बेल-बूटे के अलंकरण से भरी है, छत के किनारे किनारे फुलो व बूटै से घिरे गोलो में राजा महाराजाओं के चित्र बने है।

अंलकरण :- सम्पूर्ण शीश महल, सुल्तान महल, सभाभवन में पशु-पक्षियों का अंलकरण नहीं है। ये सभी स्थान फुल-पत्तों बूटो-बैलों, जालियों से भरे हुए है। फुल-पत्तो पर मडराते पक्षी आदि बहुत कम बनाये गये है सभा भवन केवल तरह-तरह के अंलकरणों से

भरा है। शीशमहल काँच के काम से सुसज्जित है चारों ओर तरह-तरह के आकारों में काँच जड़े हुए है। इन्हें देख कर लगता है जैसे सोने चाँदी की मीनाकारी की गई है। शीश महल से सटे गलियारों व कक्षों में कई स्थानों पर गहरे रंग पृष्ठभूमि पर एक ही हल्के रंग का अलंकरण इसके विपरित कही पर हल्के रंग की पृष्ठभूमि पर एक ही गहरे रंग का अलंकरण किया गया है। एक कक्ष में गहरे नीले रंग की पृष्ठ भूमि बना कर सफेद रंग से फूल - पत्ते, बेल-बूटे, जालियाँ, चौखाने सभी कुछ एक रंग से किया गया है। ऐसे ही पीले रंग की पृष्ठभूमि व सफेद अलंकरण, सफेद रंग की पृष्ठभूमि व कत्थई रंग से अंलकरण करके एक विशेष आभा का सर्जन किया गया है।

मूर्तिकला

गोविन्ददेव जी मंदिर की प्रतिमाः-गर्भगृह में भगवान कृष्ण व राधा की सप्तधातु की चल मूर्तियाँ है जो संगमरमर के बने १ या १) फुट ऊँचे स्थान पर विराजमान है।

स्थापत्यकला

सामोद गढ़ः-सामोद कस्बे की प्रमुख सड़क पर लगभग १ या १)किमी चलने पर जहाँ मुख्य संड़क बन्द होती है वहीं सामोद पैलेस का प्रथम द्वार बना हुआ है। यह द्वार लगभग १६-२० फुट ऊँचा है। विशाल लकड़ी का द्वार है जिस पर बड़ी-बड़ी सामने की ओर कीले लगी है। द्वार के ऊपर छतरीनुमा दो मंजिल झरोखा बना है तथा दायें व बाया एक-एक झरोखें बने है। द्वार पर हल्का पीला रंग किया गया है। सामान्य सा द्वार के ऊपर फूलों का अलंकरण किया गया है। द्वार के अन्दर छोटी पोले बनी है जिसमें एक चौकीदार बैठा रहता है। इस द्वार से लगती हुई पैलेस की प्राचीर है। इसी द्वार से जाने का टेढा-मेढा रास्ता है। जो तीन छोटी पोले के मध्य गुजरता हुआ पैलेस को प्रवेश द्वार तक पहुँचता है। द्वार भी लगभग १६-२० फुट ऊँचा है यहाँ पर दो चौकीदार आने जाने वालों का ब्यौरा लिखते है। इस द्वार में प्रवेश करने पर इस द्वार के अन्दर दायें व बायें छोटी लोहे की तोपे रखी है तथा एक लम्बा चौड़ा महल का खुला परिसर बना है जिसमें एक तरफ राजा महाराजों की कारें आदि रखी है तथा गमले, और कहीं-कहीं छोटी घास की क्यारियां लगी है। इसी परिसर में सामने पैलेस का मुख्य द्वार है, जो २७-२८ लाल पत्थर की सीढियां चढनें पर आता है जो लगभग पाँच मंजिल है जिसमें तीन मंजिल के लगभग प्रवेश द्वार है जिसके दोनों और छोटे-छोटे खम्बों के गोल स्थान बने है तथा इसके ऊपर दो मंजिला छतरीनुमा झरोखा है जो रानियों के बैठने या खड़े होने का स्थान था। झरोखे के ऊपरी छतरी पर पीतल के छोटे-छोटे कलशनुमा आकृतियां लगी हुई है।

इस द्वार पर पीले रंग में सफेद रंग का अलंकरण किया गया है। इस द्वार में प्रवेश करते ही एक खुला चौक है। और कमने बने है तथा कमरों के आगे बालकनी बनी है जिस पर नीचे पत्थर व ऊपर लोहे की रैलिंग लगी है। चौक के मध्य में एक फव्वारा भी बना है। इस चौक सामने एक टेडे-मेडे गलियारे में होते हुए दूसरे चौक में जाने का रास्ता बना है। दूसरे चौक में नवीन निर्माण से लिफ्ट बनाई गई है तथा यहाँ आगन्तुकों के मंनोरंजन के लिए कठपुतलियों के खेल का इतंजाम किया गया है इस चौक से ऊपर रानियों के लिए खिड़कियाँ बनी हुई है। इन खिड़कियों में लकड़ी के बने दरवाजे है। जो जाली के समान खोले व बन्द किये जा सकते थे। सभा भवन अत्यन्त सुन्दर फूल, बेल, बूटो व भित्ति चित्रों से अलंकृत है। इनमें सोना स्याही से भी काम लिया गया है।

शीशमहलः-शीशमहल अत्यन्त सुन्दर कांच की जड़ाई से सजाया गया है विभिन्न प्रकार व रंगों के काँचों का उपयोग किया गया है। शीशमहल की जालियों में भी रंगीन काँच का प्रयोग किया गया है। जिस पर सूर्य की रोशनी पड़ने पर रंगीनी प्रकाश निकलता है। शीशमहल के पीछे देखने पर नवनिर्मित स्विंगपुल बना हुआ है तथा होटल स्टाफ के मकान बने है।

सुल्तान महलः- सुल्तान महल सामोद महल का ही एक भाग है जो महाराजा सुल्तान ने बनवाया था यहाँ के गाइड के अनुसार यह महल उनका निजि महल था तथा इसी महल में महाराजा सुल्तान निवास करते थे। यह महल सुन्दर अलकंरणों से सुसज्जित है। इसमें मुख्य सभा भवन है जिसके दायें व बायें दोनों ओर तिबरियाँ बनी हुई है। जिनमें तीन द्वार दो खम्भों पर बने है इन तिबरियों पर भी सुन्दर अंलगरण दिया गया है तथा बेल, बूटे, फूलों से लद्दे पौधे बने है। सभा

भवन की सामने की दीवार पर बेलदार चौखाने में नीचे भित्तिचित्र बने है उनसे ऊपर फूलो से लद्दे पौधे जो गमलों में तथा कुछ बिना गमलों के है। सबसे ऊपर बूटे बने है, इसी दीवार में दो झरोखा व दो दरवाजे बने है तथा मध्य में दीवार में ही एक बड़ा छतरीनुमा खांचा बना है जिस पर अन्दर से गहरी नीले रंग की पृष्टभूमि में सफेद रंग से जालीनुमा अंलकरण है तथा नीचे दोनों ओर फूलो से लद्दे छोटे पौधे है। यहाँ सम्भवतः महाराजा बैठा करते थे। वह खाँचा सभा भवन से तीन सीढियाँ ऊपर है। इसी के पीछे एक ओर कक्ष बना हुआ है जिसके अन्दर जाने का रास्ता जो दायें द्वार बने उनमें अन्दर जाने से आता है यह कक्ष भी बाहर के सभा भवन के समान सुन्दर अलंकरण से सुसज्जित है। दोनों कक्षों में भी सोफा लगा है। बाहर सभा भवन वाली सोफा पर चाँदी का काम किया गया है। खाँचा दो कक्षों के मध्य बना है जिसमें से आर-पार देखा जा सकता है। सभा भवन में छः जोड़े खम्बे बने है।

किलाः–सामोद पैलेस के प्रवेश द्वार से बाहर निकलते ही २०–२५ कदम पर सामने की ओर ऊपर जाती सीढियां नजर आती है जिसके सामने एक सीमेन्ट को द्वार बना है। जिसके ऊपर जाने के लिए ३७६ सीढियां बनी है यह सीढिया जहाँ पर समाप्त होती है वहाँ लोहे का टेनसेट बना है तथा दो पत्थर की कुर्सियाँ लगी है व एक पानी की टंकी बनी है। यहाँ से सामने एक कच्चा पत्थरों का रास्ता है यह रास्ता जहाँ समाप्त होता है वही किले का द्वार है जो आजकल बन्द पड़ा है। इस किले के कोई रंग रोशन नहीं है यह चूने व पत्थरों से बना है तथा ज्यादा बड़ा नहीं है। यहाँ के लोगों के अनुसार यहाँ पर इसी प्रकार के तीन किले है जिसमें से एक इसी पहाड़ी से नजर आता है वह भी पत्थर व चूने का बना लगता है व कोई रंग नहीं किया हुआ है। इस पहाड़ी से देखने पर सामोद कस्बे का अत्यन्त मनोहरी दृश्य नजर आता है चारों ओर अरावली की पहाड़ियाँ नजर आती है व मध्य में सामोद कस्बा दिखाई देता है।

गोविन्द देवजी का मंदिरः– सामोद कस्बे के बाजार के पास यह मंदिर स्थित है। मंदिर के बाहर मिट्टी है। यहां से संगमरमर की पांच सीढियाँ बनी है। सीढियाँ चढ़ने पर मुख्य प्रवेश द्वार है ऊपर आठ खम्बों की छतरी जिसके दोनों तरफ बैठने के ऊँचे स्थान बने है। इस द्वार के लगते मंदिर की चारों ओर की प्राचीर बनी है तथा दीवार के चारों कोनों पर चार छोटी ४ खम्बों की छतरियाँ बनी है मुख्य प्रवेश द्वार के दायें बायें कक्षों के दरवाजे बने है। मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर छोटी तिबारी है इस तिबारी के बाद एक बड़ा खुला चौक है जिसके चारों ओर तिबारियां बनी है तिबारियां के अन्दर दायें बायें कक्ष बने है, जिनमें पुजारी परिवार निवास करते है। चौक के सामने एक तिबारी बनी है इस तिबारी के मध्य में गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा परिसर बना है। गर्भगृह के दोनों ओर गरूड़ के चित्र बने है तिबारियाँ दोहरे खम्भों की बनी है। गर्भगृह के पट के चारों ओर हल्का अलंकरण है। भगवान के पट सामान्य लकड़ी के बने है। गर्भगृह पर हल्का अलंकरण है तथा एक दो भित्ति चित्र है। गर्भगृह के द्वार के ऊपर बले व बूटे उभरे हुए है। गर्भगृह के तिबारे की छत के किनारे पर बेल बनी है। मंदिर हवेली शैली में बना है।

जानकी नाथ जी का मंदिरः–यह मंदिर सामोंद कस्बे में बाजार जाने के रास्ते में स्थित है यह एक सामान्य प्राचीन मंदिर है यहाँ के पुजारी परिवार को याद भी नहीं कि यह मंदिर कब का बना हुआ है। सड़क से ५–६ सीढियाँ चढने पर इसका मुख्य द्वार सीमेन्ट का बना है जो साधारण है। मुख्य द्वार के पास एक छः पत्थर के छोटे खम्भों का कुंआ बना हुआ है और चारों और रेलिंग बनी है जो पत्थर की है। सामान्य सी तिबारी, तिबारी के बाद खुला चौक, चौक में शिवलिंग बना है, शिवलिंग के चारों ओर पार्वती, गणेश, ब्रह्म व नंदी की मूर्तियाँ है। मूर्ति छोटी-छोटी है तथा शिवलिंग के पास ही एक केले का वृक्ष लगा है। शिवलिंग के बाद सभाभवन है जिसके चारों ओर खम्भें बने है इन खम्भों पर छत लगी है। खम्भे पत्थर के चौकोर है सभा भवन में गर्भगृह बना है।

शिव लिंग के चारों ओर खम्बे है जो सीमेन्ट के बने है तथा इनपर छत डाली गई है। फर्श पत्थरों का बना है। सभागृह के गुलाबी रंग किया हुआ है। खम्भों के ऊपर पीला रंग किया गया है। गर्भगृह पर की छत पर गुम्बद बना है। गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा परिसर है मंदिर में पुजारी परिवार निवास करता है।

अतः **सार तत्व** यह है कि आंचलिक कला और सांस्कृतिक वैभव को उजागर करने तथा लुप्त होते कला स्मारक, चित्र, अलंकरण की ओर ध्यान आकृष्ट करने एवं पर्यटक केन्द्र विकसित करने में भी सहायक होगा।

सन्दर्भ

१. डॉ. रीता प्रताप - जयपुर की चित्राकंन परम्परा प्रकाशक - राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर प्रकाशन २०११
२. स्व. श्री जगदीश सिंह गहलोत - जयपुर व अलवर राज्य का इतिहास (तृतीय भाग), हिन्दी साहित्य ग्रंथ जोधपुर संस्करण १९६६
३. सोमनाथ गुप्त -ढूंढ़ाड़ प्रदेश की साहित्य धाराऐं, जयपुर
४. देवीसिंह मण्डावा - राजपूत शाखाओं का इतिहास
५. राघवेन्द्र सिंह मनोहर - राजस्थान के प्राचीन नगर व कस्बे १९९९